B.Ed प्रथम सेमे० 2022

उपनिषदीय शैक्षिक दर्शन
'UPANISHADIC EDUCATIONAL PHILOSOPHY'

वैदिक साहित्य अत्यन्त गूढ़ एवं श्रृंखलाबद्ध रूप से संहिता ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद को महत्व प्रदान करता है विषय की दृष्टि से वेदों को कर्म, उपासना एवं ज्ञान में विभाजित किया जाता है।

उपनिषद का अर्थ एवं परिभाषा Meaning and Definition of upanishads)

उपनिषद शब्द की उत्पत्ति उप + नि + षद् से हुई है इन शब्दों का अर्थ है - 'व्यवधान रहित सम्पूर्ण ज्ञान'
अतः उपनिषद से तात्पर्य ऐसे ग्रन्थों से है जो वेदों से समाहित दार्शनिक ज्ञान का विकास करते हैं। अतः उपनिषद वे है जिनकी विद्या समस्त अर्थों को सम्पन्न करने वाले इस संसार के क्रियाकलाप का नाश करती है जिस कारण सांसारिक बन्धन शिथिल पड़ जाते हैं तथा समाप्त हो जाते है।

डॉ० राधाकमल मुखर्जी के अनुसार:- "उपनिषदों का कर्म-काण्ड में विश्वास नही है वरन उनका ज्ञान प्राप्ति में विश्वास है जिसके द्वारा जीवात्मा का विश्वात्मा में विलयन उसे भौतिक अस्तित्व से मुक्ति मिल सकती है।

उपनिषद की संख्या 'Numbers of upanishads'

उपनिषद की वास्तविक संख्या का अनुमान लगाना कठिन है उपनिषद महाकोष में 223 उपनिषदों की सूची दी गई है। इन प्राप्त उपनिषदों में जो प्रमुख हैं वे 12 हैं। ईश, कठ, प्रश्न, मुण्डक, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य बृहदारण्यक कौषीतकी एवं श्वेताश्वर।

कुछ विद्वानों के मतानुसार उपनिषदों की संख्या 108 है जिनमें 10 को प्रमुख माना गया है।

उपनिषद दर्शन के प्रमुख तत्व Major Elements of Upanishad Philosophy'

1 आध्यात्म विद्या एवं
2 नीतिशास्त्र

अध्यात्मिक विद्या के अन्तर्गत परम सत्ता जगत का स्वरूप तथा संसार की समस्याओं की व्याख्या की जाती है। नीतिशास्त्र के अन्तर्गत व्यक्ति के अन्तिम लक्ष्य उसके आदर्श, कर्म का मुक्ति साथ सम्बन्ध पुनर्जन्म का सिद्धान्त एवं मुक्ति की अवधारणा आदि का वर्णन किया जाता है उपनिषदों में परम सत्ता अथवा वास्तविक सत्ता को ब्रह्म कहा गया है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

उपनिषदीय दर्शन की प्रकृति Nature of upanishad Philosophy

विद्या (ज्ञान) पर बल -

i परा तथा
ii अपरा

इसमें परा विद्या का सर्वश्रेष्ठ तथा ब्रह्म ज्ञान कराने वाली श्रेष्ठ विद्या माना गया है जबकि उपरा विद्या कर्म पर आधारित है। जिसमें पिता किसी लाभ की इच्छा लिए हुए कर्म विद्या प्राप्त करने पर बल दिया जाता है।

परम सत्य तत्व की खोज :- उपनिषदीय दर्शन के अनुसार परम तत्व में आत्मा तथा परमात्मा को सम्मिलित किया गया है उपनिषदों में आत्मा को नित्य शाश्वत अजन्मा तथा पुरातन कहा गया है। यह नश्वर तथा जन्म मृत्यु से परे है।

ब्रह्म एवं जीवन के सम्बन्ध :- उपनिषद में जीव को आत्मा को परमात्मा अर्थात् ब्रह्म की उपाधि प्रदान की गई है जीवन विभिन्न बन्धनों में जकड़ा हुआ जबकि आत्मा इन सभी से विमुक्त है।

उपनिषद दर्शन के मूल सिद्धान्त

1 ब्रह्म एवं आत्मा एक है :- उपनिषदीय दर्शन में सबसे अधिक आत्मा तत्व को प्रकाशित किया गया है उपनिषदों में आत्मा, सत्य, ब्रह्म एवं आनन्द आदि

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर द्वारा निर्मित है। इस सृष्टि की रचना ईश्वर द्वारा बनाई गई है उपनिषदों में ब्रह्म के दो रूप मूर्त एवं अमूर्त मिलते हैं

उपनिषदों में लिखा है कि समस्त देवताओं की शक्तियाँ ब्रह्म पर ही निर्भर है

इसलिए उपनिषदों में ब्रह्म को ईश्वर सत्य एवं आनन्द उनके प्रकार से वर्णित किया गया है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया